Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - SEMESTER - VI
MJC-11 Contemporary Indian Philosophy

"Vivekanand"
"Concept of Man" (मनुष्य की विवेकानन्द अवधारणा)

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार - मनुष्य मूलतः एक दिव्य, अनंत और अमर आत्मा है और शारीरिक सीमाओं से परे है। मनुष्य वह जागरूक प्राणी है, जो अपनी भावनाओं, विवेक और नैतिकता के दम पर न केवल अपनी रक्षा करता है, बल्कि अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए निरंतर संघर्ष और विकास करता है।

आत्मा का ज्ञान, आत्मा या परमात्मा का दर्शन, कर्म-बंधनों मोह के बंधनों को काटना, अपने मन को शांत करके संसार से निवृत होकर परमार्थ में स्थिर होना। अंत में मोक्ष में चले जाना। यह हर मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

इसलिए परिवर्तनशीलता व्यक्तिगत विकास और सामंजस्य मानव की विशेषताएँ हैं, जो न केवल नर जीवन का बल्कि विकास के माध्यम से सभी मानव जीवन रूपों का प्रतिनिधित्व करती है जो शारीरिक बनावट, व्यवहार और पहचानने और अनुकूलन करने की क्षमता द्वारा परिभाषित होती है।

उन्होंने 'मनुष्य-निर्माण' शिक्षा पर जोर दिया। जिसका अर्थ शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्य पूर्ण विकास है। विवेकानन्द ने आत्म विश्वास, साहस और दूसरों की सेवा को सबसे

बड़ा भ्रम माना और कमजोरी को ही सबसे बड़ा पाप कहा।

विवेकानन्द के अनुसार मनुष्य का वास्तविक स्वरूप यह है कि इसमें भौतिक अभिव्यक्ति के रूप में आभासी मनुष्य और साथ ही अनंत दिव्य आध्यात्मिक सार, वास्तविक मनुष्य दोनों मौजूद हैं।

विवेकानंद अपने अनोखे तरीके से वास्तविक की खोज करते हैं। इनके अनुसार मनुष्य एक आत्मा है। आध्यात्मिकता पर इनका जोर इतना अधिक है कि मनुष्य के शारीरिक पहलू भी आध्यात्मिक रूप धारण कर लेते हैं।

विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक आत्मा पूर्णता की अवस्था को प्राप्त करेगी। मनुष्य के पाँच आवरण होते हैं - भौतिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आनंदमय। आज की शिक्षा पहले चार आवरणों का विकास तो कर सकती है, लेकिन पांचवे का नहीं जिसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक है।

मनुष्य एक सामाजिक और आध्यात्मिक प्राणी है जो अपने व्यक्तित्व का विकास स्वयं आर्जित करता है। मनुष्य की अवधारणा के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं—

(1) दिव्यता का अंतर्निहित स्वरूप - मनुष्य केवल शरीर या मन नहीं है, बल्कि वह "अमृतस्य पुत्र" (अमृत की संतान) है। इनके अनुसार

मनुष्य के भीतर ही अनंत ज्ञान, शक्ति और पवित्रता पहले से विद्यमान है।

(2) आत्मविश्वास (Faith in one self) विवेकानन्द ने कहा स्वयं में विश्वास रखो और उस विश्वास पर दृढ़ रहो। उन्होंने इसे शक्ति का मूल बताया और कहा कि अज्ञानता से भी अधिक भय कमजोरी से पैदा होता है।

(3) कर्म और सेवा (Service as Religion) इनके अनुसार "वही लोग जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं।" उन्होंने नर सेवा ही नारायण सेवा का सिद्धान्त दिया।

(4) मनुष्य-निर्माण शिक्षा (Man-Making Education) शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं बल्कि ऐसी शिक्षा है जो चरित्र निर्माण करे, मन की शक्ति बढ़ाए, बुद्धि का विकास करे और व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए।

(5) शक्ति और पुरुषत्व: विवेकानन्द ने शारीरिक और मानसिक शक्ति (पुरुषत्व) को बहुत महत्व दिया, क्योंकि कमजोर व्यक्ति न तो अपना और न ही समाज का भला कर सकता है।

(6) व्यावहारिक वेदान्त: उन्होंने कहा कि वेदान्त केवल पहाड़ों में रहनेवाले के लिए नहीं है बल्कि हर दैनिक जीवन में

ज्ञान प्राप्त करने की ललक को लागू किया जाना
चाहिए।

क्योंकि हम निर्मल आनन्द का माध्यम
और हम ईश्वर का ईश्वरत्व है
सर्वोच्च आध्यात्म ही जीवन का
है मनुष्य ऐसा ही है। युवाओं को करते
आदेश साहस, उत्कृष्ट व्यक्तित्व
तथा मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर
बनाने की क्षमता विद्यमान है।
उन्होंने युवाओं के लिए कहा था
" उठो जागो और तब तक मत रुको
जब तक लक्ष्य को प्राप्त न कर जाए।
वे युवाओं में आशा और
उम्मीद देखते थे। इनके लिए
युवा पीढ़ी परिवर्तन की अग्रदूत है।
गुण समाहित है। मानव जीवन में अनेक
भावनाओं और हमारे विचारों
और कार्यों को आकार देते
हैं। जीवन में यदि कुछ सबसे
मूल्यवान है, तो वह है — ज्ञान सत्य
और भगवान का स्मरण। ज्ञान हमें
अंधकार से प्रकाश की ओर
ले जाता है, सत्य हमें धर्म के
मार्ग पर स्थिर रखता है और
भगवान हमें मोक्ष का मार्ग दिखाता
है। यह तीनों तत्व मनुष्य जीवन को
सार्थक बनाते हैं।